# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

NAAC Accredited-2015
'B' Grade (CGPA 2.62)

## Name of the Faculty - Humanities

## (Choice Based Credit System)

## CBCS Syllabus

## Name of the Course B. A. III Hindi Sem. V

## Paper No. VII

विशेष लेखिका (Special Author ) कृष्णा सोबती

## With effect from June - 2018-2019

हिंदीविभाग

सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

बी.ए. भाग–तीन पाठ्यक्रम सत्र–v

प्रश्नपत्र क्रमांक – 7 विशेष लेखिका हिंदी ( Special Author)कृष्णा सोबती

अध्यापन वर्ष :–2018-2019,2019-2020,2020-2021

प्रस्तावना :–

हिंदी साहित्य में कहानी लेखन की एक सुदीर्घ परंपरा है। प्रेमचंद के बाद अनेक लेखकों ने उसे नई जमीन दी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अनेक आंदोलनों के दौर से गुजरती हुई अब वह यथार्थ से सीधा साक्षात्कार करने में समर्थ है। इस बीच उसने अनेक देशी–विदेशी रचनाकारों के शिल्प–सौंदर्य से अपने को समृदध किया है। अब उसकी कथा–भूमि भी पर्याप्त विस्तृत हो गयी है। गॉव,अंचल,आदिवासी क्षेत्र,कस्बा,नगर,महानगर सभी के जीवन–प्रवाह को वह अपने में समाहित कर चुकी है। कहानीकारों कीरचना–दृष्टि भी अब अधिक वैज्ञानिक और सूक्ष्म हो गयी है। इन कहानीकारों में कृष्णा सोबती का अपना विशिष्ट स्थान है। रचनाकार के रूप में उनका अध्ययन जरूरी लगता है।

उद्देश्य :–

1. लेखिका की बहुमुखी प्रतिभा से परिचित कराना।
2. लेखिका के साहित्यिक स्थान को निर्धारित कराना।
3. लेखिका के साहित्य से परिचित कराना।
4. लेखिका की विचारधारा से परिचित कराना।
5. लेखिका के निर्धारित ग्रंथों का सूक्ष्म आलोचनात्मक अध्ययन कराना।

# CBCS PATTERN B. A. III PEPER NO. VII SEM. V

## विशेष लेखिका (Special Author) कृष्णा सोबती

## [Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

**Total Theory Lectures- (60)**

**पाठयपुस्तक**

**बादलों के घेरे :–(कहानी संग्रह) कृष्णा सोबती,**
**राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली 110002**

| **अध्ययनार्थ विषय** | **No of Lectures** |
|---|---|
| **इकाई 1** | |
| 1. कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व | (06) |
| 2. कृष्णा सोबती के साहित्य में स्त्री विमर्श | (06) |
| 3. कृष्णा सोबती के कहानी साहित्य की विशेषताएँ | (06) |
| **अध्ययनार्थ कहानियॉ** | |
| **इकाई 2** | |
| 1. बादलों के घेरे | (06) |
| 2. दादी–अम्मा | (04) |
| 3. भोले बादशाह | (04) |
| **इकाई 3** | |
| 4. बहनें | (04) |
| 5. बदली बरस गई | (04) |
| 6. गुलाबजल गॅड़ेरिया | (04) |
| **इकाई 4** | |
| 7. कुछ नहीं–कोई नहीं | (04) |
| 8. दोहरी सॉझ | (04) |
| 9. जिगरा की बात | (04) |
| 10. सिक्का बदल गया | (04) |

## Equivalent Subject for Old Syllabus

| Sr.No. | Name of the Old Paper | Name of the New Paper |
|---|---|---|
| 1. | विशेष लेखक (Special Author)<br>ओमप्रकाश वाल्मीकि | विशेष लेखिका (Special Author)<br>कृष्णा सोबती |

## Nature of Question Paper
### प्रश्नपत्र स्वरुप एवं अंक विभाजन

| | |
|---|---|
| प्रश्न.1 बहुविकल्पी चौदह प्रश्न | 14 |
| प्रश्न. 2 लघुत्तरी प्रश्न –दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित (आठ में से सात) | 14 |
| प्रश्न. 3 अ) ससंदर्भ व्याख्या ( कहानी संग्रह पर ) (तीन में से दो ) | 08 |
| आ) लघुत्तरी प्रश्न( पूरे पाठयक्रम पर ) (तीन में से दो ) | 06 |
| प्रश्न.4 दीर्घोत्तरी प्रश्न( पूरे पाठयक्रम पर ) (अंतर्गत विकल्प के साथ) | 14 |
| प्रश्न.5 दीर्घोत्तरी प्रश्न( पूरे पाठयक्रम पर ) | 14 |
| कुल अंक | 70 |

---

## संदर्भ ग्रंथः–


1. 'कहानी : नई कहानी' नामवर सिंह
2. नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर
3.हिंदी कहानी कहानी का इतिहास – गोपाल राय
4.हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान – रामदरश मिश्र
5. हिंदी कहानी की रचना–प्रक्रिया – परमानंद श्रीवास्तव
6.नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी
7.कुछ कहानियाँ : कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी
8.हिंदी कहानी का पहला दशक –संपा. भवदेव पाण्डेय
9. हिंदी कहानी का विकास – मधुरेश
10.हिंदी कहानी : प्रक्रिया और पाठ – सुरेंद्र चौधरी
11.समकालीन हिन्दी कहानी : अन्तरंग परिचय –सी.एम. योहन्नान
12.कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व और कृतित्व–शंकर राठोड
13.कृष्णा सोबती : कथा साहित्य–महेश आलोक
14.कृष्णा सोबती काकथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ –डॉ.शहनाज जाफर बासमेह

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

NAAC Accredited-2015

'B' Grade (CGPA 2.62)

## Name of the Faculty - Humanities

## (Choice Based Credit System)

## CBCS Syllabus

## Name of the Course B. A. III Hindi Sem. VI

## Paper No. XII

विशेष लेखिका (Special Author ) कृष्णा सोबती

## With effect from June - 2018-2019

## हिंदी विभाग

## सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

## बी.ए. भाग–तीन पाठ्यक्रम सत्र –VI

## प्रश्नपत्र क्रमांक –12 विशेष लेखिका ( Special Author) कृष्णा सोबती

## अध्यापन वर्ष :–2018-2019,2019-2020,2020-2021

**प्रस्तावना :–**

प्रेमचंद–युग में ही हिंदी–कथा–रचना के क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश हो चुका था किन्तु स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद नारी–जागरण और स्त्री–शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार के फल–स्वरुप इस क्षेत्र में महिला रचनाकारों की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ। शिवानी,कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, मेहरुन्निसा परवेज, चित्रा मुदगल, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा, अनामिका, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, जया जदवानी, लवलीन, अलका सरावगी आदि महिला उपन्यासकारों ने समकालीन उपन्यास–लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इन्हीं महिला रचनाकारों में से कृष्णा सोबती एक महत्वपूर्ण रचनाकार है जिनको 2017 का ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

**उद्देश्य :–**

1. लेखिका की बहुमुखी प्रतिभा से परिचित कराना।
2. लेखिका के साहित्यिक स्थान को निर्धारित कराना।
3. लेखिका के साहित्य की प्रेरणाओं से परिचित कराना।
4. लेखिका की कृतित्व से परिचित कराना।
5. लेखिका के निर्धारित ग्रंथों में नारी चेतना से अवगत कराना।

---

# CBCS PATTERN B. A. III PEPER NO. XII SEM. VI

## विषेष लेखिका(Special Author )कृष्णा सोबती

## [Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]

**Total Theory Lectures- (60)**

**पाठयपुस्तकः–**

**समय–सरगम : (उपन्यास) कृष्णा सोबती,राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली।**

| **अध्ययनार्थ विषय** | **No of Lectures** |
|---|---|
| **इकाई 1** | (12) |
| 1. कृष्णा सोबती का कृतित्व<br>2. कृष्णा सोबती के साहित्य की प्रेरणा<br>3. नारी चेतना का स्वरुप | |
| **इकाई 2**<br>समय–सरगम उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन | (12) |
| **इकाई 3**<br>समय–सरगम उपन्यास के पात्र का चरित्र–चित्रण | (12) |
| **इकाई 4**<br>समय–सरगम उपन्यास के संवाद तथा देशकालवातावरण | (12) |
| **इकाई 5**<br>समय–सरगम उपन्यास की भाषाशैली तथा उददेश्य | (12) |

# Equivalent Subject for Old Syllabus

| Sr.No. | Name of the Old Paper | Name of the New Paper |
|---|---|---|
| 1. | विशेष लेखक (Special Author)<br>ओमप्रकाश वाल्मीकि | विशेष लेखिका(Special Author)<br>कृष्णा सोबती |

## Nature of Question Paper
### प्रश्नपत्र स्वरुप एवं अंक विभाजन

| | |
|---|---|
| प्रश्न.1 बहुविकल्पी चौदह प्रश्न | 14 |
| प्रश्न.2 लघुत्तरी प्रश्न–दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित (आठ में से सात) | 14 |
| प्रश्न.3 अ)ससंदर्भ व्याख्या ( उपन्यास पर ) (तीन में से दो ) | 08 |
| आ)लघुत्तरी प्रश्न( पूरे पाठयक्रम पर ) (तीन में से दो ) | 06 |
| प्रश्न.4 दीर्घोत्तरी प्रश्न ( पूरे पाठयक्रम पर ) (अंतर्गत विपल्प के साथ) | 14 |
| प्रश्न.5 दीर्घोत्तरी प्रश्न ( पूरे पाठयक्रम पर ) | 14 |
| कुल अंक | 70 |

---

## संदर्भ ग्रंथ :–


1. हिंदी उपन्यास –संपा. भीष्म साहनी भगवती प्रसाद निदारिया
2. हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा–रामदरश मिश्र
3. कथा विवेचना और गद्य शिल्प –रामविलास शर्मा
4. सृजनशीलता का संकट –नित्यानंद तिवारी
5. हिंदी उपन्यास –संपा. नामवर सिंह
6. हिंदी के चर्चित उपन्यासकार–डॉ.भगवतीशरण मिश्र
7. हिन्दी उपन्यास का विकास–मधुरेश
8. आधुनिक हिन्दी उपन्यास–1 सं. : भीष्म साहनी, रामजी मिश्र भगवती प्रसाद निदारिय
9. हिन्दी उपन्यास का स्त्री–पाठ–रोहिणी अग्रवाल
10. स्त्रीत्ववादी विमर्श : समय और साहित्य–क्षमा शर्मा
11. आज की कहानी –विजयमोहन सिंह
12. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में मध्यवर्ग–डॉ.शशी पालिवाल
13. आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का कथा साहित्य–डॉ.सरीता बहुखंडी
14. कृष्णा सोबती : कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन –डॉ.सुरेखा तांबे.


---

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

**Name of the Faculty of Humanity**

**CBCS SYLLABUS**

**Name of the Course B. A. III Hindi Sem. V**

**Paper No. VIII**

**With effect from June-2018-2019**

# काव्यशास्त्र

**हिंदी विभाग**

**सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर**

**बी.ए. भाग–तीन पाठ्यक्रम सत्र–V**

**प्रश्नपत्र क्रमांक– 8 काव्यशास्त्र**

**अध्यापन वर्ष :–2018-2019,2019-2020,2020-2021**

**प्रस्तावना :–**

किसी रचना के गठन, भाव तथा मूल्य उद्‌घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक होता है। काव्यशास्त्र के अध्ययन से पाठकों की दृष्टि एंव सोच में परिवर्तन आता है। साहित्य के माध्यम से समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण बदलता है। मूल्यों को बनाए रखने में काव्यशास्त्र का अध्ययन विशेष महत्व रखता है।

**उद्देश्य :–**

1) साहित्य निर्मिति की प्रक्रिया का बोध कराना।

2) साहित्य / काव्य के भेदों को अवगत कराना।

3) साहित्य की नवीन विधाओं का परिचय कराना।

4) गद्य तथा पद्य के तत्वों को समझाना।

5) शब्दों की शक्ति को समझना।

6) अलंकारों को अवगत कराना।

## CBCS PATTERN B. A. - III PAPER NO. - VIII SEM. - V

## Credits: Theory - (04), Practical's - (00)

**Total Theory Lectures – (60)**

## अध्ययनार्थ विषय

**No of Lectures**

**इकाई :– अ) साहित्य** (10)

1. परिभाषा, तत्व, प्रेरणा तथा प्रयोजन (भारतीय तथा पाश्चात्य)
2. शब्द–शक्तिःस्वरूप, शब्द–शक्ति के भेद.अभिधा, लक्षणा और व्यंजना का सामान्य परिचय। (10)

. **इकाई :– आ) काव्यभेद** (15)

1. महाकाव्य (भारतीय और पाश्चात्य तत्व)
2. प्रगीत और उसकी विशेषताएँ
3. गजल का सामान्य परिचय।

**इकाई :– इ) गद्यभेद** (15)

1. नाटक – परिभाषा, पाश्चात्य तत्व।
2. उपन्यास – परिभाषा, तत्व।
3. कहानी – एकांकी, निबंध, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज का सामान्य परिचय।

**इकाई :– ई) अलंकार** (10)

1. शब्दालंकार – अनुप्रास, यमक, श्लेष।
2. अर्थालंकार – उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति .

(परिभाषा तथा उदाहरण अपेक्षित है उपभेद अपेक्षित नही।)

# प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक वितरण

| | अंक |
|---|---|
| प्रश्न 1. बहुविकल्पी चौदह प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| प्रश्न 2. लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित ) (8 मे से 7) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| प्रश्न 3. अ) टिप्पणियाँ लिखिए (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 08 |
| . आ) टिप्पणियाँ लिखिए (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 06 |
| प्रश्न 4. दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| प्रश्न 5. दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| कुल अंक | 70 |

# Equivalent Subject for Old Syllabus

| Sr. No. | Name of the Old Paper SEM-V | Name of the New Paper SEM-V |
|---|---|---|
| 1. | साहित्यशास्त्र और समालोचना | काव्यशास्त्र |

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र
2. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य की रुपरेखा – डॉ. तेजपाल चौधरी
5. साहित्यशास्त्र – डॉ. चंद्रभान सोनवणे
6. साहित्यशास्त्र – डॉ. संजय नवले
7. साहित्य विवेचन – सुमन मलिक
8. भारतीय साहित्यशास्त्र – डॉ.विठठल भालेराव
9. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. ज्ञानराज गायकवाड
10. सौंदर्य शास्त्र के तत्वों – कुमार विमल
11. साहित्यिक विमर्श – डॉ. रविंद्रकुमार शिरसाट
12. काव्यशास्त्र : विविध आयाम – संपादक डॉ. मधु खराटे
13. आलोचना के आधारस्तंभ – रामेश्वरलाल खंडेलवाल
14. साहित्यिक निबंध – लेखक एवं संपादक शांतीस्वरुप गुप्त
15. भारतीय एंव पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देशराजसिंह भाटी

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

**Name of the Faculty of Humanity**

**CBCS SYLLABUS**

**Name of the Course B. A. III Hindi Sem. VI**

**Paper No. XIII**

**With effect from June 2018-2019**

# आलोचना

---

**हिंदी विभाग**

**सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर**

**बी.ए. भाग–तीन पाठ्यक्रम सत्र–VI**

**प्रश्नपत्र क्रमांक – 13 आलोचना.**

**अध्यापन वर्ष :–2018-2019,2019-2020,2020-2021प्रस्तावना :–**

आज किसी भी रचना के पढ़ने के पश्चात रसास्वाद की आवश्यकता अधिक होती है। रचना रसास्वाद से युक्त हो तो पाठकों में उत्साह निर्माण होता है। इसी दृष्टि से साहित्य के उपादानों का प्रयोग तथा साहित्य में उतरे गुणों को परखना महत्वपूर्ण होता है। जिससे साहित्य के मर्म तथा मूल्यों को परख,निरख जाता है। अतः इन्हे परखने के लिए समालोचना की आवश्यकता होती है।

**उद्देश्य :–** 1) छात्रों को साहित्य के उपकरणों को समझना।

2) रसानुभूति की प्रक्रिया समझना।

3) साहित्य के मूल्य, गुणों को पहचानना।

4) आलोचना के माध्यम से विभिन्न रचनाओं के आलोचना पद्धति तथा विभिन्न विमर्शों को समझना।

5) छंदो का परिचय कराना।

## CBCS PATTERN B. A. - III PAPER NO. - XIII SEM. - VI

## Credits: Theory - (04), Practical's - (00)

### Total Theory Lectures – (60)

**अध्ययनार्थ विषय** **No. of Lectures**

**इकाई :–अ) साहित्य के उपकरण** (10)

1) बिंब विधान 2) मिथक

3) प्रतीक 4) फंतासी (फैंटेसी) का सामान्य परिचय

**इकाई :– आ) आलोचना** (20)

1.आलोचना की परिभाषा, स्वरूप आलोचक के गुण

2.आलोचना के प्रकार –1) व्याख्यात्मक 2) ऐतिहासिक
3) तुलनात्मक 4) मार्क्सवादी
4.स्त्री विमर्श, किसान विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श , .
दलित विमर्श का सामान्य परिचय।

**इकाई :–इ) रस** (15)

1.रस की परिभाषा।

2.रस के अंगो का सामान्य परिचय।

3.रस के भेद – शृंगार, वीर, करुण, अद्‌भुत, भयानक, रौद्र, बीभत्स, .
हास्य, शांत रस का सोदाहरण परिचय।

**इकाई :– ई) छंद** (15)

1. मात्रिक छंद, दोहा, सोरठा तथा चौपाई
2. वर्णिक छंद,इंद्रवज्रा, शिखरिणी तथा मंदाक्रांता

(लक्षण तथा उदाहरण अपेक्षित है, उपभेद अपेक्षित नहीं हैं।)

## प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक वितरण.

| | अंक |
|---|---|
| प्रश्न 1. बहुविकल्पी चौदह प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| प्रश्न 2. लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित) (8 में से 7) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| प्रश्न 3. अ) टिप्पणियाँ लिखिए (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 08 |
| . आ) टिप्पणियाँ लिखिए (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 06 |
| प्रश्न 4. दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| प्रश्न 5. दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| कुल अंक | 70 |

# Equivalent Subject for Old Syllabus

| Sr. No. | Name of the Old Paper SEM-VI | Name of the New Paper SEM-VI |
|---|---|---|
| 1. | साहित्यशास्त्र और समालोचना | आलोचना |

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र
2. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य की रूपरेखा – डॉ. तेजपाल चौधरी
5. साहित्यशास्त्र – डॉ. चंद्रभान सोनवणे
6. साहित्यशास्त्र – डॉ. संजय नवले
7. साहित्य विवेचन – सुमन मलिक
8. भारतीय साहित्यशास्त्र – डॉ. विठठल भालेराव
9. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. ज्ञानराज गायकवाड
10. सौंदर्य शास्त्र के तत्वों – कुमार विमल
11. साहित्यिक विमर्श – डॉ. रविंद्रकुमार शिरसाट
12. काव्यशास्त्र : विविध आयाम – संपादक डॉ. मधु खराटे
13. आलोचना के आधारस्तंभ – रामेश्वरलाल खंडेलवाल
14. साहित्यिक निबंध – लेखक एवं संपादक शांतीस्वरूप गुप्त
15. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देशराजसिंह भाटी

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

**Name of the Faculty - Humanities**

**CBCS Syllabus**

**Name of the Course B. A. III Hindi Sem. V**

**Paper No. IX**

आदिकालीन और मध्यकालीन हिंदी साहित्य

का इतिहास (संवत् 1050 से 1900 तक)

**With effect from June - 2018-2019**

## हिंदी विभाग

## सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

## बी.ए. भाग–तीन पाठ्यक्रम सत्र– पाँचवा

## अध्यापन वर्ष : 2018-2019,2019-2020,2020-2021

## प्रश्नपत्र क्र. 9 : आदिकालीन और मध्यकालीन हिंदी साहित्य का इतिहास (संवत् 1050 से 1900 तक)

हिंदी साहित्य के आदिकालीन और मध्यकालीन इतिहास से छात्रों को अवगत कराने के हेतु से इस प्रश्नपत्र का निर्धारण किया गया है। साथ ही इस साहित्येतिहास में किन दार्शनिक विचारधारों का असर साहित्यकारों पर किस रूप में पड़ा, इसका विवेचन भी इतिहास के अध्येताओं के लिए आवश्यक है। हिंदी साहित्य के इतिहास की कालजयी रचनाएँ एवं रचनाकारों के सामान्य परिचय के बिना समग्र इतिहास का अध्ययन नहीं हो सकेगा। इन सभी बातों को केंद्र में रखकर ही हिंदी साहित्य के इतिहास का कालानुरूप विकास छात्रों के अध्ययन हेतु रखा गया है।

**उद्देश्य :**

1) हिंदी साहित्य की दार्शनिक पूर्वपीठिका से परिचित कराना।

2) हिंदी साहित्य के इतिहास का परिचयात्मक अध्ययन।

3) हिंदी साहित्य के आदिकालीन और मध्यकालीन कालजयी रचना तथा रचनाकारों का सामान्य परिचय।

4) हिंदी साहित्य के इतिहास के कालानुरूप विकास का अध्ययन।

**अध्ययनार्थ विषय**

**No Of Lectures**

**अ)** (10)

1) हिंदी साहित्य की दार्शनिक पूर्वपीठिका वैदिक दर्शन,बौद्ध दर्शन,जैन दर्शन,इस्लाम दर्शन।

2) हिंदी साहित्य का काल विभाजन तथा नामकरण।

**आ) आदिकाल** : (15)

1) आदिकाल की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ।

2) आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ।

3) प्रतिनिधि रचनाकार . अमीर खूसरो, विद्यापति।

4) प्रतिनिधि रचनाएँ. पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो।

**इ) भक्तिकाल** : (20)

1) भक्तिकाल की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थिति।

2) निर्गुण भक्ति काव्यधारा :

अ) ज्ञानाश्रयी शाखा की विशेषताएँ, कबीर का सामान्य परिचय।

ब) प्रेमाश्रयी शाखा की विशेषताएँ, जायसी का सामान्य परिचय।

3) सगुण भक्ति काव्यधारा :

अ) रामभक्ति शाख की विशेषताएँ, तुलसीदास का सामान्य परिचय।

ब) कृष्णभक्ति शाखा की विशेषताएँ, सूरदास का सामान्य परिचय।

4) प्रमुख रचनाकार . रैदास, मीराबाई।

**ई) रीतिकाल** : (15)

1) रीतिकाल की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ।

. 2) रीतिकालीन साहित्य की विशेषताएँ।

3) प्रमुख रचनाकार केशवदास,भूषण,बिहारी,घनानंद।

.....

# EQUIVALENT SUBJECT FOR OLD SYLLABUS

| Sr.No. | Name of the Old Paper Sem-v | Name of the New Paper Sem-v |
|---|---|---|
| 1. | हिंदी साहित्य का इतिहास 2010 तक | आदिकालीन और मध्यकालीन हिंदी साहित्य का इतिहास (संवत् 1050 से 1900 तक) |

**प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक वितरण**

| | |
|---|---|
| प्रश्न 1. बहुविकल्पीय चौदह प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 अंक |
| प्रश्न 2.दो तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए (पूरे पाठ्यक्रम पर) (आठ में से सात) | 14 अंक |
| प्रश्न 3. अ) टिप्पणियाँ (रीतिकाल पर) (तीन में से दो) | 08 अंक |
| आ) टिप्पणियाँ (अ तथा आ विभाग पर) (तीन में से दो) | 06 अंक |
| प्रश्न 4.निबंधात्मक प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ)(आदिकाल और रीतिकाल पर) | 14 अंक |
| प्रश्न 5.निबंधात्मक प्रश्न (सिर्फ भक्तिकाल पर) | 14 अंक |

.....

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का मध्यकाल – डॉ. इश्वरदत्त शील
3. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
4. हिंदी साहित्य का सँबोध इतिहास – डॉ. गुलाबगिरी जे. अपारनाथी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
6. साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपती चंद्र गुप्त
7. https://youtu.be/5rH3ucV4i x4
8. htttps://youtu.be/oEE-6LwTwC4

9- https://www.youtube.com/playlist?

List = PL_a1TI5CC9RERW9Qbc4044PrwQ9QBix1h


---

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

**Name of the Faculty - Humanities**

**CBCS Syllabus**

**Name of the Course B. A. III Hindi Sem. VI**

**Paper No. XIV**

आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास
(सन 1900 से 2010 तक)

**With effect from June - 2018-2019**

## हिंदी विभाग

## सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

## बी.ए. भाग तीन . पाठ्यक्रम . सत्र छटा

## अध्यापन वर्ष : 2018-2019,2019-2020,2020-2021

## प्रश्नपत्र क्र 14 : आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास (सन 1900 से 2010 तक)

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के इतिहास से छात्रों को अवगत कराने के हेतु से इस प्रश्नपत्र का निर्धारण किया गया है। साथ ही आधुनिक हिंदी साहित्य पर जिन दार्शनिक विचारधाराओं का असर हुआ है विवेचन भी तपाठ्यक्रम में किया जाएगा। हिंदी के आधुनिक रचनाकार, उनकी कृतियाँ, विविध वाद एवं विविध विमर्श के अध्ययन के साथ विविध विधाओं के विकास का अध्ययन इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।

**उद्देश्य :–**

1) आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पूर्वपीठिका से परिचित कराना।
2) आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास का परिचयात्मक अध्ययन कराना।
3) आधुनिक हिंदी साहित्य के रचनाकारों का सामान्य परिचय कराना।
4) आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास के कालानुरूप विभिन्न वाद एवं विधाओं के विकास का अध्ययन कराना।

**अध्ययनार्थ विषय :–** **No of Lectures**

**अ)** आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि – गांधीवाद, फुले आंबेडकरवाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद (15)

**आ)** आधुनिक साहित्य का परिचय :

1. पद्य विभाग – आधुनिक काव्यधाराओं का उद्‌भव और विकास।

छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, हिंदी स्त्रीवादी कविता, हिंदी दलित कविता। (15)

2. गद्य विभाग – आधुनिक गद्य विधाओं का उद्‌भव और विकास।

उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा,रेखाचित्र। (15)

**इ)** रचनाकारों का सामान्य परिचय प्रेमचंद, मोहन राकेश, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, गीतांजली श्री, अनामिका, सुशीला टाकभौरे, हबीब तनवीर, चंद्रसेन विराट। (15)

.....

# EQUIVLENT SUBJECT FOR OLD SYLLABUS

| Sr.No | Name of the Old Paper Sem-VI | Name of the New Paper Sem-VI |
|---|---|---|
| **2.** | हिंदी साहित्य का इतिहास 2010 तक | आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास (सन् 1900 से 2010 तक) |

**प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक वितरण**

| | |
|---|---|
| प्रश्न 1. बहुविकल्पीय चौदह प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 अंक |
| प्रश्न 2. दो या तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए। (आठ में से सात) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 अंक |
| प्रश्न 3. अ) टिप्पणियाँ (तीन में से दो) (इ विभाग पर) | 08 अंक |
| आ) टिप्पणियाँ (तीन में से दो) (अ और इ विभाग पर) | 06 अंक |
| प्रश्न 4. आधुनिक काव्यधारा पर निबंधात्मक प्रश्न | |
| अथवा | |
| आधुनिक गद्य विधाओं पर निबंधात्मक प्रश्न | 14 अंक |
| प्रश्न 5. आ विभाग पर निबंधात्मक प्रश्न | 14 अंक |

.....

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. हिंदी साहित्य का आधुनिक काल – डॉ. इश्वरदत्त शील, डॉ. आभारानी
2. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास–सुमन राजे
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास –डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
4. हिंदी साहित्य का सही इतिहास – डॉ. चंद्रभानु सोनवणे
5. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – शंभुनाथ पाण्डेय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
7. https://youtu.be/7y7D6iVBoTw
8. htttps://youtu.be/X3ZeeCsIYGM
9. https://youtu.be/VeVGP2IJRnO

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

**Name of the Faculty - Humanities**

**CBCS Syllabus**

**Name of the Course B. A. III Hindi Sem. V**

**Paper No. X**

**प्रयोजनमूलक हिंदी**

**With effect from June - 2018-2019**

# हिंदी विभाग
# सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर
## बी.ए. भाग–तीन पाठ्यक्रम सत्र–V
## प्रश्नपत्र क्रमांक – 10 प्रयोजनमूलक हिंदी
## अध्यापनवर्ष:2018-2019,2019-2020,2020-2021

**प्रस्तावना:**

प्रयोजनमूलक हिंदी यह हिंदी का एक महत्त्वपूर्ण रूप है। राजभाषा हिंदी के रूप में हिंदी प्रशासन और कार्यालय की भाषा के रूप में विकसित हुई। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में तो इसका महत्व और प्रासंगिकता अधिक बढ़ गई है। कार्यालयीन हिंदी के साथ हिंदी भाषा जनसंचार माध्यमों में निरंतर नये आयामों को उद्घाटित कर रही है। परंपरागत संदर्भ स्रोतों के साथ अब भाषा और लिपि के नये संसाधन भी विकसित हो रहे हैं। विश्वभाषा के तौर पर हिंदी ने एक नया रूप प्राप्त किया है। हिंदी भाषा के इस प्रयोजनमूलक रूप और उसके विविध आयामों का अध्ययन न केवल महत्त्वपूर्ण है अपितु प्रासंगिक भी है।

**उद्देश्य:**

1. प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप एवं विकास से छात्रों को परिचित कराना।
2. आधुनिक जनसंचार माध्यमों में हिंदी के बढ़ते प्रयोग एवं संभावनाओं से छात्रों को परिचित कराना।
3. हिंदी के प्रयोग के प्रति रूचि जगाकर पत्राचार संबंधी क्षमता विकसित करना।
4. कार्यालयीन एवं पत्राचार से छात्रों को अवगत कराना।
5. प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों से छात्रों को अवगत कराना।
6. प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से रोजगारपरक कौशल को विकसित करना।

———————————————————————

## CBCS PATTERN B. A. III PEPER NO. X SEM. V
## [Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]
## Total Theory Lectures - (60)

| • अध्ययनार्थ विषय | तासिकाएँ ( **Lectures** ) |
|---|---|
| **इकाई 1 प्रयोजनमूलक हिंदी** | **(15)** |
| 1 अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूपगत विशेषताएँ | |
| 2 प्रयोजनमूलक हिंदी के व्यवहार क्षेत्र | |
| 3 प्रयुक्तियाँ | |
| 4 उपादेयता और चुनौतियाँ | |
| **इकाई 2 जनसंचार माध्यम** | **(15)** |
| 1. समाचार लेखन के तत्व | |
| 2. समाचार लेखक के गुण | |
| 3. पटकथा लेखन | |
| 4. नव इलेक्ट्रानिक माध्यमः ई मेल, वीडियो कॉन्फरसिंग, ब्लॉग | |
| 5.वृत्तांतलेखन(सामाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक,शैक्षिक)संदर्भ पर | |
| **इकाई 3 संदर्भ स्रोत** | **(15)** |
| 2. कोश ग्रंथों का सामान्य परिचय | |
| 1. पारिभाषिक शब्दावलीः सामान्य परिचय, प्रकार एवं महत्त्व | |
| 3. हिंदी पोर्टल और वेबसाइट | |
| 4. हिंदी भाषा और लिपि के संसाधन | |
| 5. हिंदी विकिपिडिया | |
| **इकाई 4 कार्यालयीन पत्राचार** | **(15)** |
| 1.कार्यालयीन पत्राचारः स्वरूप एवं प्रकार | |
| 2. नौकरी के लिए आवेदन पत्र | |
| 3. पदाधिकारियों के नाम पत्र | |
| 4. अधिसूचना | |
| 5. सरकारी पत्र | |

# Equivalent Subject for Old Syllabus

| Sr.No | Name of the Old Paper | Name Of The New Papr |
|---|---|---|
| 1. | प्रयोजनमूलक हिंदी | प्रयोजनमूलक हिंदी |

## प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

| | |
|---|---|
| प्रश्नः1 बहुविकल्पी चौदह प्रश्न | 14 |
| प्रश्नः2 लघुत्तरी प्रश्न–दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित (8 में से 7) | 14 |
| प्रश्नः3 (अ) लघुत्तरी प्रश्न–इकाई 3 पर (3 में से 2) | 08 |
| (आ) टिप्पणियॉ (3 में से 2) | 06 |
| प्रश्नः4 दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) | 14 |
| प्रश्नः5 दीर्घोत्तरी प्रश्न | 14 |
| कुल अंक : | 70 |

---

**संदर्भ ग्रंथ**


1. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिंदी
2. भोलानाथ तिवारी, राजभाषा हिंदी
3. डॉ. दंगल झालटे, प्रयोजनमूलक हिंदीः सिध्दांत और प्रयोग
4. कैलाशनाथ पांडेय, प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका
5. सं. डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, प्रयोजनमूलक हिंदी
6. डॉ. अर्जुन तिवारी, संपूर्ण पत्रकारिता
7. डॉ. माधव सोनटक्के, प्रयोजनमूलक हिंदीः प्रयुक्ति और अनुवाद
8. htpps://Wikipedia.org/wiki/ iz;kstuewyd fganh
9.www.cstt.nic.in
10.www.rajbhasha.nic.in
11.www.google.com/Top/world/Hindi

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

**Name of the Faculty - Humanities**

**CBCS Syllabus**

**Name of the Course B. A. III Hindi Sem. VI**

**Paper No. XV**

व्यावहारिक हिंदी

**With effect from June - 2018-2019**

# हिंदी विभाग

## सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

## बी.ए. भाग–तीन पाठ्यक्रम सत्र–VI

## प्रश्नपत्र कमांक – 15 व्यावहारिक हिंदी

## अध्यापन वर्ष:2018-2019,2019-2020,2020-2021

**प्रस्तावना:**

व्यावहारिक हिंदी के रूप में हिंदी भाषा का बहुमुखी विकास हो रहा है। हिंदी का बैंक, दूरदर्शन, सरकारी कार्यालय, रेल, मीडिया, फिल्म, इंटरनेट, विज्ञापन आदि में बडे पैमाने पर प्रयोग हो रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी हिंदी की महत्ता को स्वीकार कर उसके जरिये अपना व्यवहार शुरू किया है। सभी स्थानों पर अब हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी ने अनुवाद के माध्यम एक ओर भारतवर्ष को जोड़ने में सेतु का कार्य किया है तो दूसरी ओर वैश्विक संदर्भ और ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी को अपनाकर स्वयं को उसके अनुकूल बनाया है। हिंदी के इस रूप ने रोजगार में कई अवसर मुहैया कर दिए हैं। अतः हिंदी के इस रूप को जानना अनिवार्य है।

**उद्देश्य:**

1. अनुवाद का स्वरूप और महत्त्व से अवगत कराना।
2. विज्ञापन की दुनिया और व्यवहार से परिचित कराना
3. अनुवाद और विज्ञापन के स्वरूप को परिचत कराना तथा अनुवाद और विज्ञापन लेखन की क्षमता विकसित करना।
4. वाणिज्यिक पत्राचार से छात्रों को अवगत कराना।
5. दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग से अवगत कराना।
7. प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से रोजगारपरक कौशल को विकसित करना।

———————————————————————————————————

# CBCS PATTERN B. A. III PEPER NO. XV SEM. VI

## [Credits: Theory-(04), Practical's-(00)]
## Total Theory Lectures-(60)

**• अध्ययनार्थ विषय** **तासिकाएँ (Lectures)**

**इकाई 1 अनुवाद** **(15)**

1 अनुवादः अर्थ, परिभाषा, प्रकार
2 अनुवादक के गुण
3 सफल अनुवाद की विशेषताएँ
4.व्यावहारिक अनुवाद (मराठी/अंग्रेजी परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद)

**इकाई 2 विज्ञापन** **(15)**

1. विज्ञापनः परिभाषा एवं प्रकार
2. विज्ञापन के तत्त्व
3. विज्ञापन का महत्त्व
4. विज्ञापन लेखन (विषय या चित्र के आधार पर)

**इकाई 3 वाणिज्य पत्राचार** **(15)**

1. वाणिज्य पत्राचारः स्वरूप एवं प्रकार
1. पूछताछ पत्र
2. क्रयादेश पत्र
3. भुगतान पत्र
4. शिकायती पत्र

**इकाई 4 वाणिज्य–वित्त व्यवहार** **(15)**

1. ई सेवाः महाईसेवा, किसान ई सेवा
2. ऑनलाईन ॲप्लिकेशन (आवेदन)–एमपीएससी, यूपीएससी, रेल्वे रिक्रूटमेंट, स्टॉफ सिलेक्शन कमीशन आदि।
3. ई बैंकिंगः इंटरनेट बैंकिंग, cashless transaction (नगदरहित व्यवहार) पेटीएम, भीम, तेज आदि।
4. आकाशवाणी, रेल,प्रेस, दूरदर्शन, बैंक में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिंदी (प्रत्यक्ष भेंट तथा निरीक्षण के आधार वृत्तांत लेखन)

# Equivalent Subject for Old Syllabus

| Sr.No | Name of the Old Paper | Name of the New Paper |
|---|---|---|
| **1.** | प्रयोजनमूलक हिंदी | व्यावहारिक हिंदी |

## प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

| | | |
|---|---|---|
| प्रश्नः1 | बहुविकल्पी चौदह प्रश्न | 14 |
| प्रश्नः2 | लघुत्तरी प्रश्न–दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित (8 में से 7) | 14 |
| प्रश्नः3 | (अ) लघुत्तरी प्रश्न–इकाई 3 पर (3 में से 2) | 08 |
| | (आ) टिप्पणियॉ (3 में से 2) | 06 |
| प्रश्नः4 | दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) | 14 |
| प्रश्नः5 | दीर्घोत्तरी प्रश्न | 14 |
| | कुल अंक : | 70 |

---

**संदर्भ ग्रंथ**


1. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिंदी
2. डॉ. सुनीलकुमार लवटे, हिंदी वेबसाहित्य
3. डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त, प्रयोजनमूलक हिंदी
4. डॉ. हरिमोहन, कंप्यूटर और हिंदी
5. डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी, अनुप्रायोगिक हिंदी
6. डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी, व्यावहारिक हिंदी और रचना
7. डॉ. दंगल झालटे, प्रयोजनमूलक हिंदीः सिध्दांत और प्रयोग
8. कैलाशनाथ पांडेय, प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका
9. www.cdacnoida.in
10. www.egyankosh.ac.in
11. ctb.rajbhasha.gov.in.

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

**Name of the Faculty - Humanities**

**CBCS Syllabus**

**Name of the Course B. A. III (Hindi) Sem. V**

**Paper No. XI**

हिंदी भाषा

**With effect from June – 2018-2019**

**सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर.तृतीय वर्ष कला (बी.ए.भाग - 3)**

**हिंदी (विशेष) प्रश्नपत्र क्र.11**

**हिंदी भाषा**

**अध्यापन वर्षः 2018-2019,2019-2020,2020-2021**

**परीक्षाएँ- 2018,2019,2020,2021 पाचवॉ** सत्र (Semester – V)

**प्रस्तावनाः (Preamble)**

हिंदी भारत की सर्वाधिक व्यावहारिक भाषा है। वस्तुतः हिंदी भारतीय लोकभाषाओं का समूह है। भारत के भाषिक दायरे में हम यह पाते हैं कि विदेशी यात्रियों ने भारत की लोकभाषाओं को ही हिंदी भाषा कहा। अतः हिंदी भारतीय लोगों के वैचारिक आदान-प्रदान का साधन निरंतर बनी रही हैं। भारतीय इतिहास के साथ-साथ हिंदी भाषा परिवर्तन के दौर पार करते-करते लोकभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और विश्वभाषा तक पहुॅच चुकी हैं। १४ सितंबर १९४९ को भारतीय संविधान की धारा ३४३(१) के तहत हिंदी भारत की राजभाषा बनी। संविधान सभा ने हिंदी को राष्ट्रहितवर्धिनी माना और इस उत्तरदायित्व को हिंदी ने निरंतर निभाया भी हैं। भारतीय विकास में हिंदी भाषा सहयोगी रही हैं। आज हम पाते हैं कि हिंदी केवल बोलचाल या साहित्य की भाषा तक सीमित नहीं रही बल्कि वह राजनीति, ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा, कार्यालयीन व्यवहार, मीडिया, सूचना-प्रौद्योगिकी, बाजार एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जनसंपर्क की भाषा का दायित्व निभा रही हैं। अतः हिंदी भाषा का अध्ययन हर भारतीय को आत्मनिर्भर बनने के लिए नितांत आवश्यक हो गया है, प्रस्तुत पाठ्यक्रम इसकी पूर्ति करता है।

**उद्देश्यः** (Objective of the Course)

1) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय कराना।

2) भाषा के विविध रूपों का परिचय कराना।

3) हिंदी भाषा एवं लिपि के उद्‌भव और विकास का परिचय कराना।

4) भाषा की शुध्दता के प्रति छात्रों को जागृत कराना।

5) मानक हिंदी वर्तनी और व्याकरण से छात्रों को परिचित कराना।

अध्ययनार्थ विषयः

1) भाषा की परिभाषा एवं उसकी विशेषताएँ। (04 Lectures)(Credit 0.2)

2) भाषा के विविध रूपः- बोली, परिनिष्ठित भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा। (12 Lectures) (Credit 0.8)
(प्रात्यक्षिक- केंद्र सरकार के किसी क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा हिंदी की कार्यप्रणाली का निरीक्षण)

3) भाषा विकास और उसके प्रमुख वादः- शारीरिक विभिन्नतावाद, भौगोलिक विभिन्नतावाद, सांस्कृतिक विभिन्नतावाद, प्रयत्न लाघव। (07 Lectures) (Credit 0.5)

4) हिंदी शब्द की व्युत्पत्ति एवं हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास। (07 Lectures) (Credit 0.5)

5) हिंदी की प्रमुख बोलियों का सामान्य परिचयः- ब्रज, अवधी, मैथिली, भोजपुरी,खडीबोली। (15 Lectures) (Credit 01)

6) हिंदी का शब्द समूहः– तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी शब्दों का सोदाहरण परिचय। (08 Lectures) (Credit 0.5)

7) देवनागरी लिपि की विशेषताएँ। (07 Lecture) (Credit 0.5)

---

Total:- (Lectures-60) (Practicals-00) (Credit-04)

## प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

| | |
|---|---|
| 1. बहुविकल्पी चौदह प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| 2. लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित) ( ८ में से ७) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| 3. अ) टिप्पणियाँ लिखिए। (३ में से २) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 08 |
| आ) संक्षेप में उत्तर लिखिए। (३ में से २) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 06 |
| 4. दीर्घोत्तरी प्रश्न ( अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| 5. दीर्घोत्तरी एक प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |

---

कुल अंक = 70

**संदर्भ - ग्रंथ सूचीः-**


1) हिंदी भाषा का इतिहास- डॉ.धीरेंद्र वर्मा

2) हिंदी भाषाः उद्‌भव और विकास- डॉ.उदयनारायण तिवारी

3) हिंदीः उद्‌भव, विकास और रूप- डॉ.हरदेव बाहरी

4) हिंदी भाषा का इतिहास- डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

5) नागरी लिपि और उसकी समस्याएँ - डॉ.नरेश मिश्र

6) हिंदी भाषा की लिपि संरचना- डॉ.भोलानाथ तिवारी

7) नागरी लिपिः रूप और सुधार- मोहन ब्रिज

8) हिंदी भाषा, राजभाषा और नागरी लिपि- डॉ.परमानंद पांचाळ

9) भाषिकी, हिंदी भाषा तथा भाषा शिक्षण- डॉ.अंबादास देशमुख


---

# SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

**Name of the Faculty - Humanities**

**CBCS Syllabus**

**Name of the Course B. A. III (Hindi) Sem. VI**

**Paper No. XVI**

## भाषाविज्ञान

**With effect from June - 2018-2019**

**सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर**

**तृतीय वर्ष कला (बी.ए.भाग - 3)**

**हिंदी (विशेष) प्रश्नपत्र क्र.16**

# भाषाविज्ञान

**अध्यापन वर्षः 2018-2019,2019-2020,2020-2021**

**परीक्षाएँ - 2019,2020,2021** छठा सत्र (Semester-VI)

**प्रस्तावनाः (Preamble)**

मन और मस्तिष्क की संयुक्त प्रक्रिया से उत्पन्न विचारों की मौखिक प्रकट अभिव्यक्ति भाषा है। यह भाषा प्रतिकात्मक होती हैं, जिसके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है। उस वैचारिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन करने की विशिष्ट पध्दति भाषाविज्ञान है । भाषाविज्ञान को सबसे पहले (Comparative Grammar) कंपरेटीव ग्रामर कहा जाता था । कुछ समय के पश्चात कंपरेटीव फिलालोजी (Comparative Philology) नाम रखा गया। आगे चलकर फिलालोजी तथा लिंग्विस्टिक्स (Linguistic) नाम दिए गए। आधुनिक समय में भाषाविज्ञान, भाषाशास्त्र, भाषाविचार, भाषालोचन तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान आदि नाम दिए गए। इन सब में भाषाविज्ञान शब्द ही सर्वसम्मत तथा सर्वाधिक प्रचलित है। जन्मजात अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण मनुष्य को भाषा तो मिल जाती हैं किंतु उस भाषा का विशेष ज्ञान उसे भाषाविज्ञान से मिलता है। मनुष्य जीवन व्यवहार में भाषा के माध्यम से समाज में संपर्क तो स्थापित करता है लेकिन भाषा उच्चारण से लेकर ग्रहण करने की स्थिति तक शरीर के अंदर चलनेवाली प्रक्रिया वैसे मनुष्य को आश्चर्य चकित करनेवाली है क्योंकि यह सारी प्रक्रिया शरीर में नैसर्गिक रुप में निरंतर चलती रहती हैं। इसका वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करने की प्रक्रिया भाषाविज्ञान है । भाषा की उत्पत्ति, गठन प्रकृति एवं विकास आदि की सम्यक व्याख्या करते हुए सिध्दांतों का निर्धारण भाषाविज्ञान करता है। भाषा के रूप में ध्वनि का उच्चारण, संवहन और श्रवण की प्रक्रिया से मनुष्य अनभिज्ञ है । इसे जानने के लिए मनुष्य की जिज्ञासा निरंतर बनी हुई हैं । इस जिज्ञासा की पूर्ति भाषाविज्ञान करता है।

**उद्देश्यः (Objective of the Course)**

1) भाषा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान कराना।

2) भाषाविज्ञान का सामान्य परिचय कराना।

3) ध्वनि उच्चारण प्रक्रिया से परिचित कराना।

4) उच्चारण की शुध्दता के प्रति जागृत कराना।

5) पद और अर्थ से परिचित कराना।

अध्ययनार्थ विषयः

1) भाषाविज्ञानः- भाषाविज्ञान की परिभाषा, भाषाविज्ञानः- (12 Lectures) (Credit 0.8)

विज्ञान है या कला ?, भाषाविज्ञान के अध्ययन के लाभ,

भाषाविज्ञान की व्याकरण से तुलना ।

2) स्वनविज्ञान (ध्वनिविज्ञान)- स्वन का अर्थ,परिभाषा, भाषा ध्वनि, (12 Lectures) (Credit 0.8)

ध्वनियंत्र और उसकी कार्यप्रणाली (उच्चारण प्रक्रिया),

स्वन गुण (ध्वनि गुण) ।

3) पदविज्ञानः- शब्द और पद, पद और संबंधतत्व, संबंधतत्व के प्रकार । (12 Lectures) (Credit 0.8)

4) वाक्यविज्ञानः– वाक्य की परिभाषा, वाक्य की आवश्यकताएँ, (12 Lectures) (Credit 0.8)

वाक्य के प्रकार ।

5)अर्थविज्ञानः- शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ, (12 Lectures) (Credit 0.8)

अर्थ परिवर्तन के प्रमुख कारण ।

---

Total:- (Lectures-60) (Practicals-00) (Credit-04)

## प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

| | |
|---|---|
| 1. बहुविकल्पी चौदह प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| 2. लघुत्तरी प्रश्न (दो या तीन वाक्यों में उत्तर अपेक्षित) ( ८ में से ७) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| 3. अ) टिप्पणियाँ लिखिए । (३ में से २) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 08 |
| आ) संक्षेप में उत्तर लिखिए । (३ में से २) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 06 |
| 4. दीर्घोत्तरी प्रश्न ( अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |
| 5. दीर्घोत्तरी एक प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर) | 14 |

---

कुल अंक = 70

**संदर्भ-ग्रंथ सूचीः-**


1) सामान्य भाषाविज्ञान-डॉ.बाबूराम सक्सेना

2) भाषाविज्ञान की भूमिका- डॉ.देवेंद्रनाथ शर्मा

3) भाषाविज्ञान- भोलानाथ तिवारी

4) भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- डॉ.कपिलदेव द्विवेदी

5) आधुनिक भाषाविज्ञान- डॉ.राजमणि शर्मा

6) भाषाविज्ञान- शिवबालक चतुर्वेदी

7) भाषाविज्ञान का सामान्य परिचय- डॉ.ज्ञानराज गायकवाड

8) भाषाविज्ञान- डॉ.तेजपाल चौधरी

9) भाषाविज्ञान के अधुनातन आयाम- डॉ.अंबादास देशमुख

10)भाषाविज्ञान एवं भाषा विचार- डॉ.मधु खराटे, डॉ.कृष्णा पोतदार